नाम : डॉ लोकेश्वर प्रसाद सिन्हा

महाविद्यालय का नाम : दुर्गा महाविद्यालय रायपुर *(छ.ग.)*

संकाय : कला

पद नाम : सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग

विषय : अज्ञेय के काव्य शिल्प

दिनांक :18/07/2023

अज्ञेय के काव्य शिल्प

'प्रयोगवाद' के प्रवर्तक कवि के रूप में 'अज्ञेय' का व्यक्तित्व एक विशिष्ट महत्व पता है। हिन्दी–साहित्य की प्रयोगवादी काव्यधारा अपनी विशिष्ट शैली तथा शिल्प के लिए प्रसिद्ध है। अज्ञेय तो काव्यधारा के सर्जक कलाकार ही थे अतः उनके काव्य में शैली, शिल्प, भाषा आदि का अध्ययन एक विशेष महत्व रखता है।

प्रयोगवादी काव्य का यह मुख्य वैयक्तिक अहंवाद स्वर है। 'अज्ञेय' के काव्य में भी यह स्वर पूर्ण शक्ति से मुखरित हुआ है। यह व्यक्तिवाद कभी–कभी अहंवाद की सीमा को स्पर्श कर जाता है। इस वैयक्तिक अहंवाद के दो रूप देखने को मिलते हैं। एक में तो कवि अपनी वैयक्तिकता को किसी भी मूल्य पर सुरक्षित रखना चाहता है. इसके लिए वह सामाजिक चेतना से भी अपने को अलग कर लेता है। दूसरा रूप वह है जिसमें कवि अपने व्यक्तित्व को सुरक्षित रखते हुए सामाजिक चेतना में व्यक्ति चेतना को मिला देना चाहता है। 'अज्ञेय' के काव्य में इस दूसरे रूप का अधिक परिष्कार हुआ है। उदाहरण के लिए 'नदी के द्वीप', 'यह द्वीप अकेला' जैसी कविताओं को लिया जा सकता है, जिनमें अज्ञेय के व्यक्तिवादी दर्शन का उत्कृष्ट रूप देखा जा सकता है। 'नदी के द्वीप' नामक कविता में कवि अपने वैयक्तिक अस्तित्व की सम्पूर्ण सुरक्षा के साथ सामाजिक–चेतना के प्रवाह में मिलना चाहता है, पर यह 'मिलन' उस सामाजिक चेतना के प्रवाह से 'विलग' नहीं हैं।

नदी तुम बहती चलो
भूखण्ड से जो दाय हमको मिला है,
मिलता रहा है।
मांजती, संस्कार देती चलो

वर्तमान जीवन व्यवस्था के प्रति कवि–मानस क्षुब्ध है। वह इसमें आमूल परिवर्तन चाहता है पर इसके लिए उसका 'अहं' किसी से सहायता लेने की

अनुमति नहीं देता। वह स्वयं अकेले ही संघर्ष करना चाहता है। पर यह एकाकी विद्रोह असफल रहता है। यह असफलता उसे एक निराशा, पीड़ा, दर्द के अन्धकार से ढक देती है पर दर्द का भी एक दर्शन है महादेवी वर्मा के काव्य की भाँति अज्ञेय के काव्य में भी पीड़ा का एक दर्शन देखने को मिलता है। उनके अनुसार पीड़ा या दर्द तो व्यक्ति के व्यक्तित्व को अग्नि में तपे कुन्दन की भाँति निखार देती है। यह दर्द व्यक्तित्व का संस्कार करता है, आत्मा का परिष्कार करता है। 'सागर पर साँझ' शीर्षक कविता की इन पंक्तियों में 'दर्द का दर्शन' देखिये –

दर्द की अपनी एक दीप्ति है।
ग्लानि वह नहीं देता
तुमने यदि, दर्द ही लिखा है,
भ्द्दा कुछ नहीं लिया, झूठ कुछ नहीं लिखा
तो आपत हो
काल भी उसे एक ही देगा और

जैसा कि अन्यत्र स्पष्ट किया जा चुका है कि वैयक्तिक अहंवाद के कारण कवि समाज की परिस्थितियों से अकेले ही जूझता है, संघर्ष करता परिणाम–रूप में असफलता हाथ लगती है। फलस्वरुप कवि कई प्रकार की मानसिक का से ग्रस्त हो जाता है। अज्ञेय के काव्य में ये मानसिक कुण्ठाएँ देखने को मिलती हैं। निराशा, हताशां, यौन वर्जनायें आदि मानसिक कुण्ठाओं ने उनके काव्य में प्रमुख स्थान है। पर इनमें सर्वाधिक प्रबल है यौन–कुण्ठा जिसका, अज्ञेय के काव्य में, व्यापक चित्रण हुआ। इन यौन–कुण्ठाओं की अभिव्यक्ति, सूक्ष्मातिसूक्ष्म अभिव्यक्ति के लिए अज्ञेय ने यौन प्रतीक यौन–बिम्बों का प्रयोग किया है। 'सावन मेघ' नामक कविता यौन–प्रतीकों की विशिष्ट रचना है। इसी कविता की ये पंक्तियाँ देखिए

''वासना के पंक सी फैली हुई थी
धारयित्री सत्य सी निर्लज्ञ, नेगी,

औ, समर्पित।''

अज्ञेय पर अस्तित्ववादी दार्शनिक सार्न का बहुत प्रभाव है। इस अस्तित्ववाद से प्रभावित होकर उन्होंने 'क्षण के महत्व की उपयोगिता की विस्तृत विवेचना की है। 'अज्ञेय' ही एक ऐसे कवि हैं जिन्होंने इस 'क्षणवाद' को न केवल गहराई से समझा है। अपितु उतनी हीं गम्भीरता से इस महत्व का प्रतिपादन किया है

''एक क्षण! होने का, अस्तित्व का अजर अद्वितीय क्षण,
हो के सत्य, सत्य के साक्षात का, साक्षात के क्षण का,
आज हम आचमन करते हैं ।

कवि वर्तमान सामाजिक व्यवस्थाओं, पारस्परिक मूल्यों का विरोधी है पर इनका विरोध वह अकेले ही करना चाहता है क्योंकि उसका अहं किसी से सहायता की याचना नहीं करने देता। फलस्वरूप इस संघर्ष में पराजित होने के बाद, पारम्परिक मूल्यों के स्थान पर नव– मूल्यों की स्थापना में। असफल होने के पश्चात् एक गहरी निराशा उसके मन में घर कर लेती है। जीवन के प्रति समाज के प्रति जगत के प्रति वह अनास्था से ग्रस्त हो जाता है। 'इत्यलम् की इन दो पंक्तियों में कवि का निराशा–ग्रस्त पराजित व्यक्तित्व का स्पष्ट चित्र हैं –

''मैं ही हूँ वह पदाक्रान्त रिरियाता कुत्ता –
मैं ही हूँ वह मीनार शिखर का प्रार्थी मुल्ला।''

पर इसका अर्थ यह नहीं है कि अज्ञेय का कवि मन केवल अनास्था, नैराश्य के स्वर ही मुखरित करना जानता है। वह जीवन के गीत भी गाता है जन–जीवन के सहज सौन्दर्य पर मुग्ध भी होना जानता है। एक सहजता के साथ, एक विश्वास के साथ वह जीवन का रस लेना भी जानता है

अज्ञेय के काव्य में सौन्दर्य–चित्रण को बहुत मनोरम रूप देखने को मिलता है। यह रूप प्रकृति–सौन्दर्य तथा रूप सौन्दर्य के रूप में देखने को मिलता है, जिसका बहुत ही कलात्मक वर्णन अज्ञेय के काव्य में मिलता है। प्रकृति–चित्रण के बहुत ही मार्मिक तथा सहज चित्र अज्ञेय के काव्य में उभरे हैं। इस चित्रण की प्रमुख विशेषता इसकी सूक्ष्मता है। लगता है कि प्रकृति –सौन्दर्य से कवि स्वयं कृ तकृत्य हुआ है, प्रकृति का एक मनोरम चित्र देखिए– ''नीला नम' छितराए बादल

हर कहीं पर निर्भर मर्मर
चीड़ों की ऊध्वर्ग भुजायें मिलता है, जिसका
मटका सा पसलिया का स्वर''

रूप–सौन्दर्य का चित्रण भी बहुत कलात्मक है, यहाँ पर कवि भावना के अतिरेक के स्थान पर मुख्य विचारों का सहारा लेकर उत्तम सौन्दर्य की सृष्टि करता है। नारी की देह–यष्टि के सौन्दर्य का चित्रण देखिए –

तुम्हारी में है।
मुझको कनक–चम्पे की कली है।
दूर ही से
स्मरण में भी गन्ध देती है।

प्रयोगवादी काव्य की सर्वप्रमुख विशेषता शैली शिल्प तथा भाषा की नवीनता शैली तथा शिल्प की दृष्टि से प्रयोगवादी काव्य का विशेष महत्व है। शैली की यह नवीनता अज्ञेय ने काव्य की प्रमुख विशेषता है। काव्य में शिल्प के महत्व को स्वीकार करते हुए अज्ञेय ने कहा है नया कवि नयी वस्तु को ग्रहण और प्रेषित करते समय शिल्प के प्रति कभी उदासीन न रहा है क्योंकि वह उसे प्रेषण से काट कर अलग नहीं कर सकता है। निम्नलिखित तत्वों के भाघार पर अज्ञेय व काव्य की शैली तथा शिल्प का अध्ययन कर सकते हैं।

1. अप्रस्तुत योजना– अप्रस्तुतों के चयन में अज्ञेय जी अत्यन्त सतर्क दिखाई देते हैं। सूक्ष्मतम भावों की प्रभावशाली, सहज तथा मार्मिक अभिव्यक्ति के लिए कवि ने बहुत सटीक तथा सार्थक प्रतीकों का प्रयोग किया है। मुख्यतः इन प्रतीकों के दो रूप देखने को मिलते है प्राचीन प्रतीकों का नवीन प्रयोग तथा विविध प्रतीकों का प्रयोग प्राचीन प्रतीक के नव–प्रयोग को स्पष्ट करने के लिए नारी–सौन्दर्य के लिए प्रयुक्त प्रतीकों को लिया जा सकता है। नारी–सौन्दर्य प्राचीन काल से कवियों का–सोत रहा है। अज्ञेय ने कतिपय रूप–चित्रों में प्राचीन प्रतीकों का नवीन उपयोग किया हैं नारी का एक रूप–चित्र तथा उसमें प्रयुक्त प्रतीकों को देखिए –

तुम्हारे नैन
पहले भोर की दो ओस–बूँदे है
अछूती, ज्योतिमय,
भीतर इवित।

इस रूप–चित्र में भोर की दो ओस–बूंदे तथा दहकते दाडिम पुष्प, इन दो प्रसिद्ध उपमानों का प्रयोग किया है। इस प्रकार परिचित प्रतीकों के सहारे कवि ने नवीन अर्थ को अभिव्यक्ति दी हैं। इसी प्रकार 'दीप' 'गिरगिट', 'सॉप' से परिचित प्रतीकों द्वारा नवीन मावाभिव्यक्ति की है। 'साँप' उन सभ्य लोगों का प्रतीक है जो चुपके से डँस लेते हैं और जीवन को विषाक्त कर देते है। अज्ञेय की निम्नलिखित पंक्तियों में 'साँप' के द्वारा जीवन की कुण्ठाओं, बाधाओं की अभिव्यक्ति हुई है –

''हम एक लम्बा साँप हैं।
जो बढ़ रहा है ऐंठता, खुलता, सरकता, रेंगता
मैं न सिर हैं (आँख तो है ही नहीं),
और न मैं हैं दाँत जहरीले

मैं कहीं उस साँप की गुंजलक में उलझा हुआ
सा एक बेकस जीव हैं''

इन प्राचीन परिचित प्रतीकों के अतिरिक्त कवि ने अन्य विविध प्रतीकों का भी प्रयोग किया है।

2. सांकेतिकता– प्रतीकों के प्रयोग करते समय, बहुधा, कवि के द्वारा साकेतिकता को महत्व मिल गया है। इस सांकेतिकता की अतिशयता के कारण प्रतीक दुरूह हो उठे हैं। कहीं–कहीं तो उनकी दुरूहता इतनी बढ़ जाती है कि उन्हें केवल प्रयोगकर्ता कवि ही समझ सकता है। इस प्रकार की सांकेतिकता से युक्त होने के कारण वे प्रतीक वैयक्तिक हो जाते हैं। अज्ञेय के काव्य में इन संकेतधर्मी प्रतीकों को प्रमुखता मिली है, उदाहरण के लिए 'नदी के द्वीप', 'यह दीप अवैला' जैसी कविताओं के प्रयोग प्रतीक लिये जा सकते हैं।

3. फ्री एशोसिएशन (असम्बद्धता)– फ्री एशोसिएशन मनोविज्ञान का एक प्रतीक इसका प्रयोग मानसिक रोगों का पता लगाने के लिए किया जाता है फ्री एशोसिएशन का तात्पर्य मन में उठने वाली ऐसी विचार श्रृंखला है जिनके विचार आपस में असम्पन्न होने अज्ञेय ने इसका प्रयोग अपने काव्य में किया है। अतः काव्य में एक दुराहता आ गयी है। उदाहरण देखिये –

''नयें मुहल्ले की ऊँची इमारतों के बीच से
लाँघना हुआ मैं मग भर ठिठक गया
मेरा ध्यान धुंधला सा पड़ता हुआ, गया मैदान के
किनारे वाली पटरी के
उस मौलश्री गाछ की और जिसके नीचे की
–डी घास में बैठकर
एक दिन दाने की विलायती मलाई की बरफ खाई थी।''

4. हाइक शैली– अक्षय ने अपने काव्य में इस नवीन शैली का भी प्रयोग किया है। इसका प्रयोग लघु कविताओं की रचना में किया जाता है। अज्ञेय के काव्य संग्रह ''अरी ओ करुणा प्रभामय'' की कविताओं में इस शैली के दर्शन होते हैं एक उदाहरण देखिए –

''पति सेवा रत सांझ
उझमता देख पराया चांद
लजाकर औट हो गयी।''

5. छन्द– छन्द विधान के क्षेत्र में अज्ञेय ने नये–नये प्रयोग किये है तथा उसमें पूर्णतः सफल भी हुए हैं। एक और उन्होंने जहाँ परम्परागत छन्दों को अपनाया है, कवित्त शैली में रचना को नहीं मुक्त छन्द के प्रयोग को एक व्यापक नाम दिया उनके अधिकांश काव्य का सृजन मुक्त छन्द में हुआ है।

इसके अतिरिक्त उन्होंने तुकान्त छन्द, बद्ध रचनायें भी की है। लोक गीत तथा छायावादी शैली के गीत भी उन्होंने लिखे तथा लघु कविताओं में भी पर्याप्त सफलता प्राप्त की है। अज्ञेय का प्रिय छन्द मुक्त छन्द ही है।

6. वैचित्र्य प्रदर्शन– अज्ञेय के काव्य मैं 'वैचित्र्य' के भी दर्शन होते हैं । इसके मूल में समचतः कवि की चमत्कार प्रियता रही है। कहीं–कहीं चमत्कार, विलक्षणता प्रकट करने के लिए कवि वैचित्र्य प्रदर्शन का सहारा लेता है। यह वैचित्रत्य प्रदर्शन दो रूपों में देखने को मिलता है– वर्णन वैचित्र्य तथा वर्ण्य वैचित्र्य।

एक उदाहरण देखिये।
''अगर कहीं मैं तोता होता।
तो क्या होता है?
तो क्या होता;

तोता होता।

(आह्लाद में झूमकर)

तो तो तो तो ता ता ता ता (निश्चय के स्वर में)

होता होता होता होता''

7. भाषा तत्व– अज्ञेय ने भाषा के महत्व पर बल दिया है। उनके अनुसार, नयी कविता की प्रयोगशीलता का पहला आयाम भाषा से सम्बन्ध रखता है। अज्ञेय काव्य कभाषा में प्रयुक्त शब्दों की नयी से नयी अर्थवत्ता का विशिष्ट महत्व है। अज्ञेय के अनुसार, ''प्रत्येक शब्द का प्रत्येक समर्थ उपयोक्ता उसे नया संस्कार देता है। इसी के द्वारा पुराना शब्द नया होता है– यही उसका कत्प है।''

अज्ञेय की काव्य भाषा संस्कारयुक्त परिष्कृत भाषा है। यह परिष्कार, कहीं–कहीं उस सीमा का स्पर्श करने लगता है कि भाषा पूर्णतः 'अभिजात्य' बन जाती है और तब उसके कृत्रिमता की गन्ध आने लगती है।

अज्ञेय को तत्सम शब्दों के प्रयोग का विशेष मौह है। यह मोह कभी–कभी उनसे ऐसे शब्दों प्रयोग करा लेता है जो अपरिचित होते हैं। जैसे– 'प्रमाथी' शब्द। इस प्रकार के प्रयोगों से भाषा में एक दुरूहता आ जाती है और पद–योजना क्लिष्ट हो जाती है। एक उदाहरण पर्याप्त होगा –

''निबिडान्धकार

को मूर्त रूप दे देने वाली

एक अकिंचन, निष्प्रभ अनाहत

अज्ञात द्युति किरण''

आसन्न पतन .....

अज्ञेय ने अपनी काव्य भाषा को नया रूप भी देने की चेष्टा की है। इसके लिए न केवल उन्होने नवीन शब्द गढ़े हैं अपितु शब्दों के प्रचलित अर्थ से पृथक नवीन अर्थों की अभिव्यंजना भी की है। भाषा के सम्बन्ध में कवि की एक और विशेष प्रवृत्ति के दर्शन होते हैं। वह प्रवृत्ति हैं, समस्त पद का प्रयोग। 'अनकन्थ गति', 'अपलक द्युति', 'अस्तित्त्व प्राप्त' आदि समस्त पद के उदाहरण दिये जा सकते हैं।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अज्ञेय, हिन्दी साहित्य के ऐसे कवि हैं जो नवीन मार्गान्वेषी हैं। हिन्दी काव्य के लिए नवीन मार्ग खोलने में, शैली शिल्प को नये आयाम देने में उनकी समता नहीं हैं। अज्ञेय एक ऐसे कवि हैं जिनके काव्य में ओज है, शक्ति है और कवि–प्रतिभा का पूर्ण निदर्शन है। यदि कहा जाये कि अज्ञेय के काव्य ने 'हिन्दी कविता' को 'आधुनिकता' के पद पर आसीन किया तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।